

राघवेन्द्र गुरु रायर सेविसिरो सौख्यदि जीविसिरो ॥प॥

तुंगातीरदि रघुरामन पूजिसिरो नरसिंघन भजकरो ॥अप॥

श्री सुधीन्द्र कर सरोज संजात जगदोळगे पुनीत
दशरथिय दशत्वव ता वहिसि दुर्मतिगळ जयिसि
ई समीर मत संस्थापकरागि निंदकरनु नीगि
भूसुररिगे संसेव्य सदाचरणी कंगोळिसुव करुणि ॥१॥

कुंदद वर मंत्रालयदल्लिरुव करेदल्लिगे बरुव
बृंदावनगत मृत्तिके जलपान मुकुतिगे सौपान
संदरुशनमात्रदलि महाताप बडिदोडिसलाप
मंदभाग्यरिगे दोरेयदिरुव सेवे शरणर संजीवा ॥२॥

श्रीद विठलन सन्निधान पात्र संस्तुतिसलु मात्र
मोद पडिसुतिह तानिहपरदल्लि इतगे सरियल्लि
मेदिनियोळगिन्नरसलु ना काणे पुसियल्लाणे
पादस्मरणेय माडदवने पापि ना पेळुवे स्तपि ॥३॥